Daily Gospel Reflections in Hindi

19 July 2019

मत्ति 22:15-22

GIVE TO CEASEAR WHAT IS TO HIM

''जो कैसर का है, उसे कैसर को दो और जो ईश्वर का है, उसे ईश्वर को''। वे नहीं चाहते कि मैं उनका राजा बन रहूँ'' (1Sam 8:7) यही यहूदियों का विश्वास था– ईश्वर ही इस्राएल का राजा (Melekh Yizrael) है (Zeph. 3:15)। राजा दाऊद, सुलैमान आदि अपने में राजा नहीं थे, वे बस ईश्वर के नाम पर इस्राएल पर शासन करते थे। किसी बाहरी राजा के अधीन रहना, उन्हें अपना राजा मानना, यहूदी कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, क्योंकि यहूदी उसे पहली आज्ञा का उल्लंघन मानते थे।

प्रभु येसु के समय रोम के राजा, कैसर इस्राएल पर शासन करते थे। हालांकि यहूदियों को अपना धर्म और सभ्यता का पालन करने की छूट दी गई थी। लेकिन शासक होने के एवज में कैसर हर यहूदी से कर वसूल लेता था। न चाहते हुए भी यहूदी नेताओं को यह माननी पड़ी थी। फरीसी इसका कड़ा विरोध करते थे। लेकिन हेरोद इसको राजी था क्योंकि उसे कैसर ने ही राजा बनाया थौ

अब, फरीसी और हेरोद के दल एक साथ प्रभु से प्रश्न करते है– ''कैसर को कर देना उचित है या नहीं (Mt. 22:17)। अगर प्रभु यह कहता कि कर देना चाहिए, तो फरीसी प्रभु को पहली आज्ञा के अपराधी मानते, और उसे मार सकते थे (Dt. 13:1-10)। अगर प्रभु यह कहते कि कैसर को कर नहीं देना चाहिए, तो हेरोदी प्रभु को रोमियों से गिरफ्तार करवा सकते थे, राज्यद्रोह का मुकदमा चलाकर उसे मार सकते थे।

प्रभु उनकी धूर्त्तता भांपकर कहते है ''जो कैसर का है उसे कैसर को दो और जो ईश्वर का है, उसे ईश्वर को''। इसका मतलब यह नहीं है कि प्रभु केवल अध्यात्मिक बातों पर ही ध्यान रखते। बल्कि प्रभु कहना चाहते है कि Politics और विश्वास, दोनों का मिश्रण नहीं करनी चाहिए। संत पौलूस कहते है, ''प्रत्येक व्यक्ति अधिकारियों के अधीन रहें, क्योंकि ऐसा कोई अधिकार नहीं, जो ईश्वर का दिया हुआ न हो'' (Rm. 13:1)। यहीं बात पिलातुस के सामने प्रभु ने कहीं थी (Jn. 19:11)। Political लाभ के लिए धर्म का इस्तेमाल करना और दुरूपयोग करना हर सभ्यता में हुआ है, और आज भी हो रहा है। उसी तरह, धर्म को बढ़ाने हेतु, Political Power का दुरूपयोग भी हुआ है और हो भी रहा है। प्रभु ये दोनों के खिलाफ है। हमें दैनिक जीवन के इन दोनों क्षेत्रों में संतुलन बनाये रखने की जरूरत है।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019